ईश्वरीय नशा कम होने के कारण

करेक्शन हमें दूसरों की नहीं स्वयं की करनी है

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

जैसा कि आपने पिछले अंक ओम-19 में पढ़ा कि दूसरों को देख उनकी कमज़ोरियों को फॉलो नहीं करना, उनकी कमज़ोरियों को देखकर वो कमज़ोरी मेरे अन्दर तो नहीं है ये चेक कर लेना और उसको चेंज कर देना। ये आवश्यक होता है। अब आगे पढ़ेंगे...

तीसरी बात होती है प्रश्न उठना। ये बाबा के महावाक्य हैं। इसपर पूरी मुरली चली थी। प्रश्न बहुत उठाते हैं दूसरों के प्रति, अपने प्रति नहीं कि मेरे मन में बहुत ऊंचा लक्ष्य था, मैं ये क्या कर रहा हूँ। दूसरों के लिए क्वेश्चन करेंगे कि यज्ञ में ये ऐसा क्यों कर रहे हैं? यज्ञ में फलाना भाई इतना पुराना है वो ऐसा क्यों कर रहा है, फलानी टीचर भी ऐसे बोलती है मुझे तो। क्यों, क्या। क्या होगा ये क्यों, क्या बाबा के शब्दों में ये क्वेश्चन मार्क टेढ़ा है ना, फुल स्टॉप तो सीधा है। क्वेश्चन मार्क टेढ़ा है तो स्थिति को भी टेढ़ा कर देता है। सारी स्थिति लॉप होने लगती है। जितने क्वेश्चन मन में उठेंगे भगवान के शब्द हैं कि प्रश्न जितने मन में उठेंगे प्रसन्नता उतनी ही खत्म होती जायेगी। जहाँ प्रश्न बहुत हैं वहाँ प्रसन्नता नहीं है। प्रश्न माना क्वेश्चन, प्रसन्न माना हैप्पीनेस, चीयरफुलनेस। तो ज्ञान के क्वेश्चन उठाना वो एक अलग बात है, उससे तो हमारा ज्ञान बढ़ेगा। लेकिन व्यवस्था में और दूसरों के पुरूषार्थ को देखकर इस संसार में जो कुछ हो रहा है उसको देखकर कि ये क्यों हो रहा है? बाबा ऐसा क्यों नहीं करता है। ये सब बातें मन को भटका देती हैं। अगली बात बाबा ने कही, और ये बिल्कुल सत्य नज़र आती है। करेक्शन करना। दूसरों को करेक्ट ज़्यादा करने लगते हैं, अपने को करेक्ट करना है ये भूल जाते हैं। दूसरों को सम्पूर्ण बनता हुआ देखना चाहते हैं। मैं भले ही पीछे रह जाऊं। गलत मानसिकता हो गई है। ये

परदर्शन कहते हैं- दूसरों को देखना, उनकी बुराइयां देखना, उनमें क्या-क्या कमज़ोरियां हैं, कहाँ-कहाँ ढीले हैं, ये देखना, परदर्शन और परचिंतन। दूसरों के बारे में बहुत सोचना। व्यर्थ चिंतन जिसे कहते हैं। कम्पलेंट के साथ ये दोनों भी चलते हैं।

भूल गये हैं कि कलियुग के अंत में सभी आत्माएं नीचे उतर आई हैं, कोई भी सम्पूर्ण नहीं है। किसी में कोई कमी है, किसी में कोई कमी। करेक्शन तो हमें खुद को करना है। दूसरों के पुरूषार्थ को तो हमें साक्षी होकर देखना है। और अगर हमारा उनसे प्यार है, तो उन्हें वायब्रेशन देकर या शब्दों से उमंग-उत्साह दिलाना है, मोटिवेट करना है। करेक्शन देते रहने से अपना कनेक्शन शिव बाबा से टूट जाता है।

बहुत सुन्दर शब्द भगवान ने बोले कि अगर तुम करेक्शन के चक्कर में पड़ गये, ये चक्रव्यूह है तो दूसरों को ही देखते रहोगे। और फिर शिव बाबा से कनेक्शन कट ऑफ हो जायेगा और तुम्हारी स्थिति दिनोंदिन डाउन होती जायेगी। अगली बात बताई कम्पलेंट्स करना, दूसरों पर ब्लेम लगाना। इसमें भी ये दिखाई देता है ऐसी आत्माओं को। गुह्य ज्ञान नहीं है। इस विश्व ड्रामा की भी सम्पूर्ण नॉलेज नहीं है। वे दूसरों के बारे में ज़्यादा सोचते हैं, परचिंतन ज़्यादा करते हैं। परदर्शन कहते हैं- दूसरों को देखना, उनकी बुराइयां देखना, उनमें क्या-क्या कमज़ोरियां हैं, कहाँ-कहाँ ढीले हैं, ये देखना, परदर्शन और परचिंतन। दूसरों के बारे में बहुत सोचना। व्यर्थ चिंतन जिसे कहते हैं। कम्पलेंट के साथ ये दोनों भी चलते हैं। इसलिए खुशी का पारा डाउन होता रहता है। स्थिति बिगड़ती जाती है। मन निराश हो जाता है। सभी ऐसे ही हैं। कोई तो अच्छा पुरूषार्थी मुझे नहीं मिलता।

कोई कह रहा था कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो ज्ञान मार्ग पर चलते सम्पूर्ण सत्य हो। हमारी एक बहन ने उसे बहुत अच्छा उत्तर दिया कि नहीं मिला ना, बहुतों को खोज है इसकी, तुम बन जाओ। तो बहुतों की खोज समाप्त हो जायेगी। तो उसे लज्जा आ गई कि शायद मैं भी नहीं हूँ। उसने तो सोचा था कि दूसरे ही नहीं हैं। अगर हमें निरन्तर खुशी में, उमंग-उत्साह में, प्राप्तियों की अनुभूतियों में मगन रहना है तो एक महान लक्ष्य को अपने सामने रखकर चलें। मुझे ये प्राप्त करना है, मुझे और कुछ नहीं देखना है। जैसे होशियार स्टूडेंट कभी कमज़ोर विद्यार्थियों को देखकर अपने को कमज़ोर नहीं करते। उन्हें तो लक्ष्य रहता है कि मुझे तो 95 प्रतिशत मार्क्स लाने हैं। बस वही सामने है। और कौन क्या कर रहा है उसको वो नहीं देखते। हम भी गॉडली स्टूडेंट हैं, पास विद ऑनर होना है, महान स्टेटस को प्राप्त करना है, इसलिए उस लक्ष्य को सामने रखते हुए और कुछ नहीं देखते हुए उमंग-उत्साह से निरंतर अपने लक्ष्य की ओर चलेंगे। तब ये जीवन सफल होगा।

पलवल-हरियाणा। हरियाणा के खेल राज्यमंत्री गौरव गौतम की जीत पर उनके निवास स्थान पर माला पहनाकर व फूलों का गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. रानी बहन एवं ब्र.कु. राजेंद्र।

पदमपुर-ओडिशा। पदमपुर महोत्सव में ब्र.कु. सुजाता को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री मुकेश महालिंग। साथ हैं बरगढ़ के सांसद प्रदीप पुरोहित तथा अन्य।

सोनीपत-मॉडल टाउन(हरि.)। राई क्षेत्र की विधायक श्रीमती कृष्णा गहलोत के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रामदेवी, ब्र.कु. मंजू एवं ब्र.कु. प्रेम धमीजा।

वाराणसी-उ.प्र.। दैनिक जागरण द्वारा महाकुम्भ यात्रा का श्रीगणेश किया गया। दैनिक जागरण के विशेष आग्रह पर ब्रह्माकुमारीज़ परिवार ने बाबा सारंगनाथ महादेव की पावन भूमि और महात्मा बुद्ध की प्रथम उपदेश स्थली सारनाथ में 'महाकुम्भ कलश' और यात्रियों का तिलक, पुष्पमाला व फूलों का गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. तापोशी, ब्र.कु. राधिका, ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. बिपिन।

अव्यक्त मुरली 04-11-2001 (पहेली-10) 2024 -25

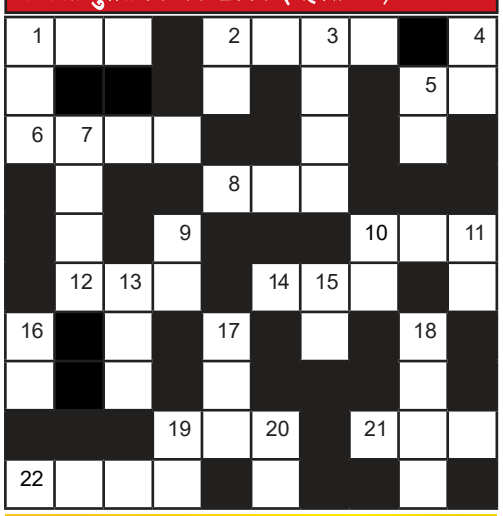

09/25- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 20-02-2001)

ऊपर से नीचेः 1.त्रिलोकीनाथ, 2. अभिमान,3. कल्याण, 4. विशेषता, 5. मेम्बर, 6. मान, 7. व्रत, 9. हलचल, 11. नाविक, 12. जीवनमुक्ति, 14. सफलता, 17.दिन।
बायें से दायेंः 1. त्रिमूर्ति, 2. अलौकिक, 5. मेहमानों, 8. तस्वीर, 10. विनाश, 13. चलन, 14. सत्ता, 15. लोक, 16. मन, 17. दिल, 18. कलम, 19. माइट, 20. भक्ति।

ऊपर से नीचे

1. अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, ... में समय नहीं गंवाओ।(3)
2. बापदादा को ..... करने का सहज साधन है "सच्ची दिल"।(2)
3. राजा का पुत्र, राजकुमार, शाहज़ादा(4)
4. राजयुक्त कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, ... से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा।(2)
5. प्रतिज्ञा, संकल्प (2)
7. ब्राह्मणों के जो विशेष संस्कार वा स्वभाव है - रहमदिल, ... के वह इमर्ज होंगे और होना ही ज़रूरी है।(4)
9. जो भी सेवा के ..... बनाये हैं, वह अच्छे बनाये हैं, जो चल रहे हैं वह अच्छे चल रहे हैं।(2)
10. सदा अपने ..... की कैंचिंग पावर, जिसको आप कहते हैं टचिंग, उस टचिंग व कैचिंग पावर का स्विच आन रखो। (2)
11. यह तो हाथों से लिखते हैं, लेकिन पहले दिल का आवाज दिलाराम के पास पहुंच जाता है। यह भी अच्छा है, बापदादा की ..... तो आती है ना! समाचार लिखने के टाइम कितनी खुशी होती है।(2)
13. आसमान, आकाश, नभ।(3)
15 अभी मनाने का और कमाने का युग है, ... करने का युग है।(2)
16 टचिंग व कैचिंग पावर का स्विच आन रखो। ..... कोशिश करती है आफ करने की, सेकण्ड में आफ करके चली जाती है।(2)
17. कई बच्चे रूहरूहान में कहते हैं-बापदादा तो शक्तियां देता है लेकिन ..... पर शक्ति यूज़ नहीं होती।(3)
18. बच्चे हाथों से लिखते हैं, लेकिन पहले दिल का आवाज ..... के पास पहुँच जाता है।(4)
19. सरिता, तटिनी।(2)
20. आदमी, पुरूष।(2)

बायें से दायें

1. कौन सा वर्ष मनाया है? संस्कार से ..... परिवर्तन का। पक्का है ना! (3)
2. जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ..... होगा।(4)
5. इस समय आप हर एक को, आत्माओं ..... रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है। (2)
6. मनोहर, रम्य और सुहावन।(4)
8. राजयुक्त कभी भी अपने स्व- स्थिति से ..... नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा। (3)
10. बापदादा ने पहले भी कहा कि आप सबने वर्ष क्यों ..... है? संस्कार से संसार परिवर्तन का। ..... है ना!(3)
12. बापदादा ने देखा कि सेवा में ..... भी है और सेवा की गति में तीव्रता भी है।(3)
14. प्रोग्राम जो भी चलता है, उसमें सिर्फ समय प्रमाण टॉपिक को उसी रूप से रखना ज़रूरी है क्योंकि जिस समय किसको पानी की प्यास है, और आप उसको 36 प्रकार का ..... दे दो तो वह स्वीकार करेगा?(3)
19. अगर नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी समाया हुआ है तो और किसी तरफ भी ..... आकर्षित नहीं होंगे।(3)
21. आप राइट हैण्डस का यादगार है। पता है कौन सा यादगार है? ..... रूप का चित्र देखा है।(3)
22. ..... बनो और समय प्रमाण रहमदिल बन बेहद की वृत्ति, दृष्टि और कृत्ति बनाने के दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ।(4)